छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण शिक्षा | उड़ान स्कूल का अनुभव

वन्दना और कल्पना

पृष्ठभूमि

हमारा स्कूल हिमाचल प्रदेश में पालमपुर के पास के एक गाँव में है। इस स्कूल में आने वाले बहुत-से बच्चे उन घरों से आते हैं जिनमें खेती रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा है और हममें से ज़्यादातर लोगों के लिए पूरा वर्ष फ़सल की बुवाई और कटाई के सिलसिलों के मुताबिक़ बँटा होता है। जिस ज़मीन पर हम अध्ययन-अध्यापन करते हैं, वह कभी जंगल हुआ करती थी और कुछ समय पहले तक चाय बाग़ान थी। यह ज़मीन खेतों और देवदार के जंगल से घिरी हुई है। हम ख़ुशक़िस्मत हैं कि पास ही में एक सदानीरा सोता बहता है जो पहाड़ी के नीचे की आवा नदी में गिरता है। इस वातावरण में हमें यह स्वाभाविक ही लगता है कि पर्यावरण और पारिस्थितिकी हमारी स्कूली कार्यप्रणाली के केन्द्र में हों।

पर्यावरण का अन्वेषण

सबसे कम उम्र (नर्सरी के, मोटे तौर पर 3 साल की उम्र के) बच्चों से लेकर सबसे बड़े (पाँचवीं कक्षा के, मोटेतौर पर 10-11 साल के) बच्चों तक, सारे बच्चे स्कूल के सब्ज़ियों के बग़ीचे की देखभाल में हाथ बँटाते हैं। वे पौधे लगाने, उनका

चित्र-1 : बच्चे स्कूल के बग़ीचे में सब्ज़ियाँ उगाते और इकट्ठा करते हैं।

रखरखाव करने और उपज को इकट्ठा करने में मदद करते हैं और कभी-कभी तो हम मिलकर बग़ीचे में उगाई गई चीज़ों को स्कूल में पकाते भी हैं। हमने पाया है कि बच्चे फ़सल को उगता देखते हुए उपज की पूरी प्रक्रिया यानी अंकुरण से लेकर फूल और फल आने तक और दोबारा बीज आने तक की प्रक्रिया, को किसी क़िताब से सीखने की तुलना में कहीं बेहतर ढंग से सीखते हैं। बाद के वर्षों में जब वे कक्षा-4 और 5 में दाख़िल होते हैं और एक विषय के रूप में ईवीएस पढ़ते हैं, यह ज्ञान उनके दिमाग़ों में मूर्त रूप ले चुका होता है और पाठ्यपुस्तक की अमूर्त बातें उन्हें ज़्यादा बेहतर तरीक़े से समझ में आती हैं।

हम इस मामले में भी ख़ुशक़िस्मत हैं कि हमारा स्कूल एक ऐसे बड़े परिसर में है जहाँ अनुभवी बाग़वान साल भर सब्ज़ियाँ उगाते हैं और फलों, फूलों व दूसरे पेड़ों की देखभाल करते हैं। हम इन बग़ीचों में और इनके आस-पास, देवदार के जंगल में और पानी के सोते के आस-पास कई बार चहलक़दमी करते हैं। इन चहलक़दमियों के दौरान बाग़वानों से उनके द्वारा किए जा रहे काम के बारे में प्रत्यक्ष तौर पर सीखने के साथ-साथ, हम अवलोकन करते हुए भी बहुत कुछ सीखते हैं। बच्चे ध्यान देते हैं कि वे बग़ीचों में परिन्दों की कुछ ख़ास प्रजातियों को ज़्यादा देखते हैं जबकि पानी के पास कुछ दूसरी प्रजातियाँ देखते हैं। वे इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि देवदार के जंगल का झाड़-झंखाड़, सोते या बग़ीचे के झाड़-झंखाड़ से बहुत भिन्न होता है। इन अवलोकनों का इस्तेमाल प्रारम्भिक बिन्दुओं के रूप में करते हुए हम जैवविविधता, जलवायु-परिवर्तन, आक्रमणशील (invasive) प्रजातियों और ऐसी ही तमाम दूसरी चीज़ों के बारे में महत्त्वपूर्ण और सूक्ष्म स्तर का वार्तालाप कर पाते हैं। हम भी शिक्षकों के रूप में, इन चहलक़दमियों पर निकलने की तैयारियों से लेकर अपने अन्वेषणों की समाप्ति तक, हमेशा इस प्रक्रिया से सीखते रहते हैं। सच तो यह है कि हमारे लिए इन चहलक़दमियों के बाद बहुत कुछ सीखना अनिवार्य हो जाता है, ताकि हम विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सवालों के लिए तैयार रह सकें, जिनमें से ज़्यादातर सवालों के तयशुदा जवाब हमारे पास नहीं होते।

परिसर के साथ-साथ हम नए और व्यापक अनुभवों की तलाश में भी रहते हैं, जैसे कि उस वक़्त सरकारी नर्सरी का भ्रमण

करना जब वहाँ ट्यूलिप के फूलों की अभूतपूर्व बहार आई थी या विज्ञान केन्द्र में जाकर देश भर से लाई गई तितलियों और कीड़ों का अवलोकन करना या रेशम उत्पादन के बारे में सीखना। इससे विद्यार्थियों को उनके निकटतम अनुभवों से बाहर की थोड़ी-बहुत दुनिया भी देखने को मिल जाती है।

आलोचनात्मक ढंग से सोचना और प्रश्न पूछना

हम बच्चों को बछड़े को जन्म लेते देखने के लिए पास की एक डेयरी में भी ले गए। यह उनमें से कुछ के लिए एक नया और अद्भुत अनुभव था, लेकिन कुछ बच्चों के लिए साधारण-सी चीज़ थी। इस अनुभव के नतीजे में हमारे बीच सार्थक बातचीत हुई जिसमें सभी उम्र के बच्चे शामिल थे — सबसे कम उम्र बच्चे भी, जिन्हें इस बात पर अचरज हो रहा था कि हम वही दूध पीते हैं जो छोटा बछड़ा पीता है और बड़े बच्चे भी थे जो ज़ोर-ज़ोर से इन्सानों के 'यौन-संसर्ग' और जन्म लेने की प्रक्रिया के बारे में सवाल पूछ रहे थे। हमें, सभी उम्र के बच्चों में इन अनुभवों से उत्प्रेरित होकर आलोचनात्मक तरीक़े से सोच-विचार करने और सवाल उठाने की प्रवृत्ति की ओर बढ़ने की सम्भावना भी दिखती है, जो हमें भी उनके साथ और गहराई से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है।

> स्कूल में हमारे पास एक नेचर टेबल है, जहाँ कोई भी बच्चा या शिक्षक अपने घर के आस-पास की या फिर उनके द्वारा घूमी गई जगहों से लाई गई दिलचस्प चीज़ों को स्कूल के साथ साझा कर सकता है। यह टेबल पूरे स्कूल की पहुँच में है और कभी-कभी, कक्षाओं को समूहों में इनका प्रदर्शन देखने ले जाया जाता है। वहाँ भी हमें कुछ विद्यार्थियों ने चुनौती दे डाली — "आप हमें फूल तोड़ने से मना करती हैं, लेकिन आपने ख़ुद इन फूलों को यहाँ लाने के लिए तोड़ा है।" इस तरह आलोचनात्मक ढंग से सवाल उठाना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के सन्दर्भ में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

छोटी उम्र के विद्यार्थियों के अनुरूप ढलना

हमने यह पाया है कि बच्चे जितने कम उम्र होते हैं, वे सीखने के लिए उतने ही ज़्यादा उत्साहित होते हैं। हम कभी-कभी इस बात का लाभ लेने से चूक जाते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि कुछ चीज़ें बहुत कम उम्र बच्चों के समझने के लिहाज़ से 'बहुत पेचीदा' होती हैं और इसलिए हम उनके साथ कुछ बातें करते ही नहीं। लेकिन बच्चे इनके लिए तैयार होते हैं; दरअसल हम शिक्षकों को उनसे बात करने के सही तरीक़ों को खोजना ज़रूरी है। छोटे बच्चों को व्यावहारिक, प्रायोगिक अनुभवों की ज़रूरत होती है। अगर हम ब्लैकबोर्ड पर रेखाचित्र बनाकर उन्हें फूल के विभिन्न हिस्सों के बारे में समझाने की चेष्टा करेंगे और पंखुड़ी, बाह्यदल, परागकोश आदि शब्दों को याद करने के लिए ज़ोर डालेंगे, तो यह चीज़ निश्चित ही बच्चों को 'बहुत जटिल' प्रतीत होगी। लेकिन अगर हम पहले विभिन्न क़िस्म के फूलों का अवलोकन करते हैं और इस बात को पहचानते हैं कि उनमें से कितने ऐसे हैं जिनके विभिन्न पक्ष एक जैसे हैं और फिर सावधानी के साथ उनके विभिन्न हिस्सों पर ध्यान देते हैं, तो जब हम उनको, उसी दिन या बाद में कभी, नाम देते चलते हैं, तो सीखने वाले के लिए यह चीज़ कहीं ज़्यादा अर्थपूर्ण हो जाती है।

ज्ञान का समेकन

इस ज्ञान को समेकित करना महत्त्वपूर्ण है और सम्भवतः यही वह क्षेत्र है जिस पर हमें ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है। एक स्तर पर, हमें ज्ञान के इन विभिन्न प्रकारों की आवश्यकता है ताकि कक्षाओं के बढ़ने के साथ बच्चों का विकास होता रहे और सीखने की प्रक्रिया अलग-थलग व ठहरी हुई न रहे — वे जो पाँच साल की आयु में सीखते हैं, उसे 12 साल की आयु में भी प्रासंगिक और एक बुनियाद के रूप में होना चाहिए। इसके लिए, हमें विभिन्न आयु-वर्गों के बीच योजनाबद्ध और सामंजस्यपूर्ण ढंग से काम करने की और ऐसे वार्तालापों की ज़रूरत है जो ज्ञान को मज़बूत करते हों। बच्चों के बड़े होने के साथ इन अनुभवों का शाब्दिक या कभी-कभार अमूर्त अभिव्यक्तियों में रूपान्तरित होना भी ज़रूरी होता है क्योंकि यह स्कूली प्रणाली के लिए आवश्यक है। हमारे अधिकांश विद्यार्थी आगे चलकर मुख्यधारा के सरकारी और निजी स्कूलों में जाएँगे और कॉलेजों में जाने की उम्मीद करेंगे जहाँ वे पढ़ाई को आगे जारी रख सकें। इन प्रक्रियाओं के लिए, इम्तिहानों में अपेक्षित जवाबों को सीखना महत्त्वपूर्ण है और हम सौभाग्यपूर्ण स्थिति में हैं कि हम अनुभवों से शुरुआत करते हुए, वार्तालापों का इस्तेमाल कर पाठ्यपुस्तकों की बेहतर समझ और दक्षता विकसित करने की ओर बढ़ सकते हैं।

हालाँकि अनुभवों और व्यवहारों की जड़ें हमारे रोज़मर्रा के कार्यकलापों में जमी होती हैं, लेकिन हम इन अनुभवों को अपेक्षित समापन तक पहुँचाने वाले समेकित वार्तालाप हर वक़्त नहीं कर पाते। हम कुछ युक्तियों का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं, जैसे कि विभिन्न मौसमों में किसी ख़ास वृक्ष के अवलोकनों को चित्रित करना, कक्षा में चर्चाएँ करना और कभी-कभी किसी अनुभव के बाद उसके बारे में अपने विचारों को लिखना। हम दिलचस्प क़िस्म के 'व्यवधानों' को सीखने के क्षणों में बदलने की कोशिश भी करते हैं, जैसे कि जब कोई अनोखा कीड़ा कमरे में आ जाता है और वहाँ से निकलने की कोशिश कर रहा होता है या जब कोई विद्यार्थी अनमने भाव से (या ऐसा हमें लगता है) खिड़की के बाहर देख रहा होता है और उस वक़्त आश्चर्य से चिल्ला उठता है जब वह किसी ऐसे

परिन्दे को पेड़ पर उतरते देखता है जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा होता।

हम इस तरह के अनुभवों का हमेशा आनन्द लेने की कोशिश करते हैं, जैसे कि सवाल पूछे जाने में आनन्द लेते हैं। हम विद्यार्थियों को उनके आस-पास मौजूद संसाधनों का उपयोग करके ख़ुद ही जवाब खोजने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ये संसाधन पुस्तकालय और घर के वयस्कों के रूप में हो सकते हैं या जैसा कि चलन बढ़ता जा रहा है — मोबाइल फ़ोन और दूसरी तकनीकें हो सकती हैं। कभी-कभी वे शुक्रवार को आयोजित होने वाली शेयरिंग असेम्बली में पूरे स्कूल के साथ इन जानकारियों को बाँटते हैं और ये स्मृतियाँ उस विद्यार्थी, शिक्षक और दूसरे विद्यार्थियों के दिमाग़ में और भी ज़्यादा बनी रहती हैं। हम उस वक़्त भी अपने अनुभवों को स्थानीय परिवेश से जोड़ते हैं जब हम गाने, मिट्टी के साँचे गढ़ने जैसी गतिविधियों और दूसरी कलाओं तथा शिल्पों में शामिल होते हैं। लेकिन हमें अभी भी लगता है कि इस क्षेत्र में और भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। विभिन्न आयुवर्गों के बीच गतिविधियों और अनुभवों का सुनियोजित सिलसिला इन सीखों को हम सभी के लिए और भी सार्थक बनाएगा।

हमारी सीखें

इनमें से कुछ गतिविधियाँ और अनुभव कुछ ज़्यादा ही सरलीकृत या शायद बहुत ज़ाहिर-से लगते है — लोगों ने हमसे सवाल पूछे हैं कि क्या इन्हें 'सीखने' की कोटि में रखा जा सकता है। लेकिन वर्षों के तजुर्बे से हमने पाया है कि ये छोटे-छोटे अनुभव अमूल्य तरीक़ों से मिलकर विद्यार्थियों को दुनिया के काम करने के ढंग का बोध विकसित करने में मदद करते हैं। जब चीज़ों की क़द्र करना सीखने की बात हो और अपने से इतर प्राणियों व चीज़ों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की बात हो, तो पर्यावरण से बेहतर शिक्षक और कोई नहीं होता। जब विद्यार्थी बड़े हो जाएँगे और जलवायु परिवर्तन, संसार में और उनके जीवन में सन्तुलन, ख़ुद की ज़रूरतों को लेकर अपनी समझ तथा क्या शोषणकारी है और क्या नहीं, इन सबके बारे में अधिक अकादमिक और गम्भीर बातचीत करने लगेंगे, तब यही अनुभव उनके विचारों की बुनियाद बनेंगे।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, यह सब विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है। शिक्षकों के रूप में हम भी हर दिन सीखते हैं और हम विद्यार्थियों से भी बहुत कुछ सीखते हैं — उनके सवालों से भी और वे अपने जीवन और अवलोकनों से जो बातें लेकर आते हैं, उससे भी। ऐसे कई अवसर आए हैं जब उन्होंने किसी ऐसी चीज़ की ओर संकेत किया है जिस पर हमने पहले कभी विचार ही नहीं किया था — मसलन, कैसे एक ख़ास क़िस्म का मशरूम किसी ख़ास क़िस्म की लकड़ी को पसन्द करता है या कीड़ों के व्यवहार के बारे में कोई बात। एक अभिभावक ने एक बार 'बाँस' पर एक सत्र आयोजित किया था, जिसमें उसके जीवन-चक्र, उसके बहुत-से उपयोगों और विभिन्न जगहों पर उसके सांस्कृतिक मूल्य के बारे में चर्चा हुई थी। उस सत्र के अन्त में उन अभिभावक और विद्यार्थियों ने बाँस के अंकुरों से तैयार किए गए एक व्यंजन को खाया था

चित्र-2 : मिट्टी के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानते-सीखते हुए क्यारी तैयार करता हुआ एक विद्यार्थी।

जिसे उन सबने मिलकर पकाया था। एक विद्यार्थी ने 'शिशु वृक्षों' (बाँस के कोमल अंकुर) को खाने की नैतिकता पर सवाल उठाया था, जो एक ऐसी बात थी जिसकी ओर हममें से किसी का कभी ध्यान नहीं गया था। विद्यार्थी झाड़ियों से बनाई गई बाड़ की बहुत छोटी-छोटी चीज़ों की ओर इशारा करते हैं और इस बात को समझने में हमारी मदद करते हैं कि कैसे एक छोटी-सी झाड़ी भी पारिस्थितिक तन्त्र की मेज़बान हो सकती है।

जब हम बच्चों से उनके परिवार के सदस्यों के बारे में पूछते हैं, तो लगभग हर बच्चा अपनी फ़ेहरिस्त में अपने जानवरों को भी शामिल करता है चाहे वे उनके कुत्ते हों, गायें हों या बकरियाँ हों। यह ऐसी संवेदना है जो ख़ुद हममें नहीं होती, क्योंकि हम 'परिवार' और 'पालतुओं' के बीच भेद करते हैं। जब परिसर में कोई साँप दिख जाता है, तो बच्चे डरते नहीं हैं — उन्हें सिर्फ़ जिज्ञासा होती है, जिसके साथ अक्सर साँप की फ़िक्र भी होती है। साँप का डर और उससे पहुँच सकने वाली क्षति का विचार लगभग हमेशा ही हमारे द्वारा उपजाया गया होता है। शिक्षकों के रूप में हमारी भूमिका ऐसे तरीक़ों को तलाशने की है जिनसे यह सुनिश्चित हो सके कि बच्चे न तो अपनी जिज्ञासा खोएँ और न ही उनके भीतर हमारे डर और हिचकिचाहटें पनपें।

चित्र-3 : उड़ान स्कूल, कन्दबरी गाँव, पालमपुर, ज़िला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश।

आभार : लेखिकाएँ अनु, डोरोथी, निशा, निशि, रिम्पी, सरोज, ध्रुव और रागिनी द्वारा इस लेख के लिए दिए गए परामर्श व सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती हैं।

वन्दना एक शिक्षिका हैं जिन्होंने उड़ान स्कूल के सभी अवतारों में बच्चों के साथ काम किया है, चाहे उसका रूप लर्निंग सेंटर का रहा हो या फिर प्राइमरी स्कूल का। वे एक उत्साही चित्रकार और गायिका हैं और बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए हमेशा नए तरीक़ों की खोज करती रहती हैं। उनसे udaanschoolkandbari@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

कल्पना उड़ान स्कूल के सबसे पहले पालकों और सबसे पहले शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने इस स्कूल में सभी उम्र के बच्चों के साथ काम किया है और वे बच्चों को जितना पढ़ाती हैं उतना ही उनसे सीखती हैं। उनसे udaanschoolkandbari@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय